डॉ. गणेश त्रिपाठी

खगोलीय घटना प्रतिसूर्य द्वारा राष्ट्र का शुभाशुभ परिज्ञान

हमारे भूमण्डल पर प्रतिपल कुछ न कुछ खगोलीय घटनाएं अवश्व ही घटित होते रहती हैं। इन खगोलीय घटनाओं का प्रभाव हमारे राष्ट्र के ऊपर शुभाशुभ रूप में अवश्य ही परिलक्षित होते रहते हैं। आज का विज्ञान यन्त्रों के आधार पर जितना उन्नत प्रतीत होता है उससे कहीं ज्यादा हमारा प्राचीन विज्ञान आध्यात्म के बल पर उन्नत था । वराह मिहिर ने खगोलीय विज्ञान (मेदनीय ज्योतिष) को अपने ग्रन्थ बृहत्संहिता में वर्णित किया है। इसमें ऐसे वैज्ञानिक तथ्य उपलब्ध हैं जिनका आज भी पूर्ण रूप से अन्वेषण नहीं हुआ है। प्रतिसूर्य, गन्धर्वनगर, परिवेष, इन्द्रचाप आदि द्वारा भी किसी भी देश विशेष के शुभाशुभत्व की विधि हमारे शास्त्रों में बताई गई है किन्तु लोग उनका विचार बहुत ही कम करते हैं केवल ग्रहों एवं नक्षत्रों के द्वारा ही सभी प्रकार के फलादेश कर देतें है किन्तु प्राचीन परम्परा यह है कि ग्रहों एवं नक्षत्रों के साथ–साथ आकाश दर्शन का भी अनुपालन करना चाहिए क्योंकि खगोलीय घटनाएं ही आने वाले समय के विषय में पूर्व ही सूचित कर देती है । इसी प्रकार की एक खगोलीय घटना (गन्धर्व नगर) पिछले वर्ष कोरोना काल के पूर्व चीन के आकाश में दिखाई दी थी। पुनः इसी प्रकार की एक अद्भुत खगोलीय घटना (प्रतिसूर्य) चीन के उत्तर पूर्व शहर मोहे में 17.10.2020 को प्रातः काल में लगभग 3 घंटे तक देखी गई। इस खगोलीय घटना में सूर्य के दक्षिण एवं वाम भाग में तथा उपर एवं नीचे के भाग में चार और सूर्य दिखाई दिये। ये सभी सूर्य के समान ही प्रकाशवान थे। ये चारों सूर्य एक प्रकार के वृत्तात्मक माला (परिवेष) में गुथें हुए प्रतीत हो रहे थें। इस दृश्य को देखकर वहां के लोगो में अत्यन्त भय व्याप्त हो गया। इस दृश्य को वहां के समाचार पत्रों में तथा भारतीय समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया ।

भारतीय ज्योतिष में इस प्रकार के दृश्य को प्रतिसूर्य के नाम से जाना जाता है। प्रतिसूर्य का अर्थ होता है सूर्य की प्रति (दूसरा रूप)। यह प्रतिसूर्य वास्तविक सूर्य के लगभग 22 अंश के अन्तराल पर वातावरण में अत्यन्त नमी होनें के कारण निर्मित होता है। इसके विषय में आचार्य वराहमिहिर ने कहा है कि जब सूर्य के प्रकाशों का अवरोध वातावरण में होता है तो इस प्रतिसूर्य की उत्पत्ति होती है। यह प्रकाशावरोध शीतप्रदेशों में ही होता है क्योंकि वहां पर वातावरण में अत्यन्त नमी होने के कारण बादल घनीभूत होकर एक प्रकार से दर्पण प्रिज्म का कार्य करते हैं जिसमें सूर्य के प्रकाशो का अवरोध होने पर वह प्रकाश पुंज के रूप में एकत्रित होकर सूर्य के जैसा ही दिखाई देने लगता है। यह प्रतिसूर्य प्रातः काल में सूर्योदय से एक प्रहर (3 घण्टे) तथा सूर्यास्त के पूर्व एक प्रहर तक ही निर्मित होता है। आधुनिक विज्ञान भी इसी सिद्धान्त को स्वीकार करता

चीन के उत्तर पूर्व शहर 17–10–2020 मोहे का वास्तविक दृश्य

है। प्रतिसूर्यो की संख्या 1 से लेकर 7 तक हो सकती है और कभी–कभी माला के जैसे (चित्र में) भी दिखाई देता है। इस विषय में वराहमिहिर बृहत्संहिता के प्रति सूर्य लक्षणाध्याय में कहते हैं कि –

दिवसकृतः प्रतिसूर्यः जलकृदुदग्दक्षिणे स्थितोऽनिलकृत् ।

उभयस्थः सलिलभयं नृपमुपरि निहत्यधो जनहा ।।

प्रतिसूर्य के लक्षण के साथ साथ इस श्लोक में प्रतिसूर्य की संख्या के अनुसार शुभाशुभ फल का विवेचन किया गया है। वराहमिहिर कहते हैं कि यदि सूर्य के उत्तर दिशा मे प्रतिसूर्य दिखाई दे तो उस देश में प्रभूत जल को करने वाला होता है। यदि सूर्य के दक्षिण दिशा में प्रतिसूर्य दिखाई दे तो वह वायु का कारक होता है। यदि सूर्य के दोनो ओर प्रतिसूर्य दिखाई दे तो उस देश में जल से भय होता है। यदि सूर्य के उपर के भाग में प्रतिसूर्य दिखाई दे तो देश के राजा का नाश होता है और यदि सूर्य के नीचे प्रतिसूर्य दिखाई दे तो देश में स्थित लोगों का नाश करता है। इस प्रकाश किस दिशा में या संख्या के अनुसार प्रतिसूर्य दिखाई दे तो उसका क्या फल होता है यह आचार्य वराहमिहिर ने बताया है। इसी प्रकार यदि प्रतिसूर्यो की माला आकाश में दिखाई दे अर्थात् मुख्य सूर्य को घेरे हुए माला के आकार में चारो ओर बहुत सारे प्रतिसूर्य दिखाई दे उस राष्ट्र में अनेक प्रकार की समस्या आती है तथा जगद् में भय व्याप्त होता है। जैसा कि ज्योतिर्निबन्ध में कहा गया है –

यदा भवन्ति तीक्ष्णांशोः प्रतिसूर्याः समन्ततः ।

जगद् विनाशमाप्नोति तथा शीतद्युतेरपि ।।

यह प्रतिसूर्य केवल सूर्य में ही नहीं बनता है अपितु चन्द्र में भी निर्मित होता है। चन्द्र से बनने वाले को प्रतिचन्द्र कहेंगे किन्तु प्रतिचन्द्र बहुत ही कम मात्रा में बनता है और दिखाई भी कम मात्रा में देता है।

17 अक्टूबर को चीन के मोह शहर में जो प्रतिसूर्य दिखाई दिया था वह एक प्रकार से माला के जैसे प्रतीत हो रहा था। जिसमें मुख्य सूर्य के दक्षिण एवं वाम भाग में तथा उपर और नीचे एवं सूर्य के आस–पास अनेक स्थानों पर छोटे–छोटे विचित्र प्रकाश पुंज दिखाई दे रहे थे। अतः इसके फल को कदापि अच्छा नहीं कहा जा सकता। यह प्रतिसूर्य चीन में आने वाले किसी भयंकर प्राकृतिक उत्पात का सूचक है। यह दृश्य सूचित कर रहा है कि आने वाले पांच महीनों के अन्दर चीन में बहुत बडा परिवर्तन होने वाला है। प्रतिसूर्य का शुभाशुभ फल पांच महीनों के अन्दर अवश्य ही प्राप्त होता है। यह दृश्य सूचित कर रहा है कि आने वाले दिनों में चीन में राजनैतिक परिवर्तन हो सकता है या फिर किसी शीर्ष नेता की अस्वाभाविक मृत्यु हो सकती है या फिर देशीय सीमा विवाद में वृद्धि हो सकती है। चीन में चोरों द्व ारा आतंक हो सकता है या फिर कोई नई महामारी या समस्या जन्म ले सकती है जिसके कारण चीन में बहुत ज्यादा मात्रा में जन की हानि होगी । अतः मार्च 2021 तक इनमे से कोई भी दुर्घटना चीन के साथ घटित हो सकती है।

इस प्रकार भारतीय ज्योतिष में अनेक प्रकार की खगोलीय घटनाओं का सटीक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। आवश्यकता है उस खगोलीय स्थिति को समझ कर उसके पूर्वानुमान को विश्लेषित करने की।

डा गणेश त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक ज्योतिष
शासकीय रामानन्द संस्कृत
महाविद्यालय, भोपाल
दूरभाष : 9795888771